VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

नक्की झील : गरासिया हरिद्वार

अशोक कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं शोधार्थी

डॉ. अरुण वाघेला

इतिहास विभाग, गुजरात यूनिवर्सिटी,
अहमदाबाद-09
Ashokdhamu.suthar@gmail.com

सारांश

हमारा देश भारत सांस्कृतिक विविधताओं एवं विशेषताओं का देश है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में रंग बिरंगी सभ्यता एवं संस्कृति की विशिष्टता का दर्शन होता है। यहां का प्रत्येक स्थान स्वंय की विशिष्ट संस्कृति, तीज त्यौहार एवं रीति-रिवाजों तथा परंपरा आदि को लेकर अपनी एक अलग ही पहचान रखते हैं। ऐसे ही राजस्थान राज्य भी अपनी सांस्कृतिक विविधता एवं विशेषताओं की मंत्रमुग्ध तथा जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली इंद्रधनुषी छटा चारों ओर बिखरता है। राजस्थान राज्य का माउंट आबू क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य के साथ कई प्रकार की संस्कृतिक विविधताओं एवं परंपराओं को संजोए हुए हैं। इनमें से एक सांस्कृतिक परंपरा इस क्षेत्र की सर्व प्रमुख जनजाति गरासिया की पित्र तर्पण परंपरा है। माउंट आबू स्थित पौराणिक झील नक्की को गरासिया हरिद्वार के नाम से जाना जाता है। राजस्थान क्षेत्र की गरासिया जनजाति के लोग पीपली पूनम के दिन आबू पर्वत स्थित इस झील में अपने पूर्वजों की अस्थियां प्रवाहित करने आते हैं जिसमें इनकी सांस्कृति, धार्मिक विश्वास तथा आस्था के जीवंत दर्शन के साथ आम जीवन से जुड़ी हुई परंपराएं देखने को मिलती है। यहां पितृ ऋण से जुड़े दो महत्वपूर्ण पक्ष देखने को मिलते हैं- पितृ तर्पण एवं गृहस्थ जीवन में प्रवेश।

शब्द:- गरासिया, नक्की झील, आबू पर्वत, पितृ तर्पण, पितृ ऋण, हरिद्वार, श्राद्ध, जनजाति, झूमरा नृत्य, वालर

प्रस्तावना:-

गरासिया जाति का प्रकृति के साथ अटूट संबंध रहा है यह प्रकृति के साथ ही जीवन यापन करते हैं। जिससे इनके त्यौहार, धार्मिक आस्था एवं मान्यता, संस्कृति एवं जीवन दर्शन में विशिष्ट परंपराओं का समावेश सहजता, सादगी और सरलता लिए हुए हैं। यह जनजाति अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, जीवन जीने के ढंग, अनूठी सामाजिक परंपराओं एवं रीति-रिवाजों, मनमोहक रंग-बिरंगी वेशभूषा एवं उन पर विभिन्न प्रकार के अंकन, विविध धार्मिक एवं आर्थिक विश्वासों तथा स्वाभिमानी इतिहास के कारण अन्य जनजातियों से अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। इनके मेले बहुदेववादी संस्कृति में जन्म, मरण, एवं परण का प्रकृति के साथ ताना बाना बुनते हैं। वैशाख पूर्णिमा को गरासिया समाज में पीपली पूनम के नाम से जाना जाता है। इस दिन नक्की झील के किनारे गरासिया जनजाति का विशाल मेला भरता है जिसमें गरासिया संस्कृति एवं धार्मिक आस्था जीवंत हो उठती है। इस मेले में गरासिया समुदाय के लोग मुख्यता अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं साथ ही निश्चल हास्य, नृत्य, संगीत, वाद्ययंत्र,

चित्र - 1. पितृ तर्पण के बाद नक्की झील किनारे मेल मिलाप के लिए एकत्रित गरासिया महिलाओं के

गायन एवं भजन आदि का लयबद्ध संगम देखने को मिलता है। राजस्थान की एकमात्र पर्वतीय स्थल माउंट आबू स्थित नक्की झील के किनारे प्रति वर्ष पीपली पूनम के दिन आयोजित गरासिया जाति के इस सबसे पवित्र मेले में स्वयंवर, पवित्र स्नान और पितृ तर्पण की परंपरा आदिकाल से अनवरत जारी हैं।

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान के सिरोही जिले के आबू पिंडवाड़ा क्षेत्र में निवासरत गरासिया जनजाति के हरिद्वार के नाम से प्रसिद्ध माउंट आबू पर्वत स्थित नक्की झील के पीपली पूनम मेलें एवं उससे संबंधित सांस्कृतिक परंपराओं तथा विशेषताओं और इस दौरान होने वाले अनोखी रस्मों- अस्थि नहीं, नाखून का विसर्जन, स्वयंवर, जोड़ियां जुड़ना, पितृ तर्पण, नृत्य-गान आदि परंपरा की अनोखी विरासत से परिचित करवाना। जो आधुनिक सभ्य समाज में भी देखने को नहीं मिलती।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन हेतु राजस्थान राज्य के सिरोही जिले की आबू तहसील के माउंट पर्वत पर स्थित नक्की झील पर पीपली पूनम(16 मई 2022 व 5 मई 2023) को आयोजित गरासिया मेले का प्रत्यक्ष निरीक्षण और इस समाज के वयोवृद्ध एवं युवा लोगों से उनकी सांस्कृतिक परंपरा, रीति रिवाज, अनुभव एवं स्मृति(मौखिक इतिहास) का उपयोग किया गया है।

नक्की झील

नक्की झील राजस्थान के सिरोही जिले में अरावली पर्वतमाला के आबू पर्वत पर स्थित है। जो सिरोही जिले के दक्षिणी पूर्वी भाग में 24°31 से 24°43 उत्तरी अक्षांश और 72°38 से 72°53 पूरी देशांतर के मध्य स्थित है। नक्की झील राजस्थान की एकमात्र प्राकृतिक झील मानी जाती है। यह झील 800 मीटर लंबी और 400 मीटर चौड़ी है। यह झील पूर्व में बाजार की ओर से छिछली तथा पश्चिम में बांध के पास 6-9 मीटर तक गहरी है।(राजस्थान जिला गजेटियर सिरोही, 2004) झील के मध्य स्थित चट्टानी टापू इसकी शोभा में चार चांद लगाते हैं। इसके आसपास का दृश्य हरे भरे ढ़लानों एवं घाटियों से बड़ा ही मनभावन है मानों प्रकृति ने अपना सारा खजाना यही लुटा दिया हो।(राजस्थान डिस्ट्रिक गैजेटियर सिरोही, 1967) समुद्र तल से 1200 से 1700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित आबू पर्वत को तीर्थराज के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्वत विभिन्न ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रहा है। यहां पर श्रीराम से लेकर पांडवों तथा स्वामी विवेकानंद तक ने इनके रमणीय और शांत वनों में साधना की थी। ऐसे ही तीर्थ का दर्जा प्राप्त आबू पर्वत का मुख्य आकर्षण इसकी पौराणिक झील नक्की है जिस से जुड़ी कई कहानियां जनमानस के विचारों को दृष्टिगत करती हैं।

नक्की झील के निर्माण से कई पौराणिक कहानियां जुड़ी हुई है। इसके बारे में एक किवदंती है कि इस झील का निर्माण देवताओं ने अपनी अंगुलियों के नाखूनों से खोदकर किया था इसलिए इस झील का नाम नख से नक्की झील पड़ा। फर्गुसन के अनुसार इसके जैसा सुंदर और कोई स्थल भारत में मेरी जानकारी में नहीं हैं।(राजपूताना गजेटियर, खंड 3 अ, 1909) पौराणिक मान्यता के अनुसार नक्की झील का निर्माण रसिया बालम यानी ऋषि वाल्मीकि ने स्थानीय राजा की कुंवारी कन्या से विवाह करने की शर्त पर अपने नाखूनों से एक रात में सूर्योदय से पहले खुदाई करके किया था। इन्हें शिव और पार्वती का अवतार भी माना जाता है। एक अन्य किंवदंती के अनुसार आबू के राजा ने अपनी बेटी के विवाह के लिए यह शर्त रखी जो व्यक्ति सूर्योदय से पहले झील को खोदेगा उसके साथ वह अपनी पुत्री का विवाह करेगा। राजा की शर्त के अनुसार एक स्थानीय व्यक्ति रसिया बालम ने नक्की झील का निर्माण पूर्ण किया लेकिन लड़की की मां के विश्वासघात के कारण इस शर्त को पूरा नहीं किया। जिससे दोनों की प्रेम कहानी अधूरी रही। यह कहानी मारवाड़ एवं गोड़वाड़ क्षेत्र के लोकगीतों में भी सुनने को मिलती है। नक्की झील के निकट स्थित जैन मंदिर के पीछे कुंवारी कन्या और रसिया बालम का मंदिर बना हुआ है जो इस कथा का साक्षी है। स्थानीय गरासिया जनजाति रसिया बालम को अपने समाज का व्यक्ति मानती है। दोनों के प्रेम को जीवन में उतारने हेतु नक्की झील पर आयोजित मेले के दौरान गरासिया लड़के-लड़कियां प्रेम विवाह करते हैं। गरासिया जनजाति में 85% से अधिक व्यक्ति प्रेम विवाह ही करते हैं जो कहीं ना कहीं इस कथा के सत्यता को भी दृष्टिगत करता है। नक्की झील गरासिया जनजाति के लिए हिंदुओं के हरिद्वार और ऋषिकेश के समान ही तीर्थ स्थल है। नक्की झील इन के लिए एक तरह से गंगा है।

पीपली पूनम का मेला

गरासिया जनजाति के मेले धर्म-अध्यात्म, जीविका, व्यापार-विनिमय, सगाई-विवाह संबंध, संस्कार एवं पूर्वजों को याद करने के केंद्र स्थल है। बाकी जातियों की तरह गरासिया जनजाति में भी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात की जीवन यात्रा की कल्पना की गई है इससे गरासिया समाज में भी अन्य समाजों की तरह पितृ तर्पण की परंपरा एवं विश्वास देखने को मिलता है। उसका जीवन मृत्यु के बाद सुखमय हो इसके लिए निश्चित समय एवं दिन पर संबंधित व्यक्ति का तर्पण क्रिया कर्म पवित्र जलाशयों के तट पर किया जाता है। हिंदू धर्म से संबंधित अधिकांश जातियां उत्तराखंड के हरिद्वार में पितृ तर्पण करने जाती हैं वही गरासिया जनजाति अपनी इस परंपरा को अपने सबसे पावन एवं पवित्र स्थलों पर संपादित करती है। गरासिया जनजाति भाखर क्षेत्र के मूल निवासी हैं। ये लोग लोग अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करने मार्कण्डेश्वर, अजारी धाम, ऋषिकेश भद्रकाली आदि स्थलों पर जाते हैं जो स्थानीय स्तर पर स्थित है जबकि सक्षम लोग जो खर्च वहन कर सकते हैं तथा जिनके पास गाड़ियां होती हैं वे माउंट आबू स्थित नक्की झील में पितृ तर्पण हेतु जाते हैं। नक्की झील को गरासिया लोग सबसे पवित्र झील मानते हैं इसी कारण यह लोग पूर्वजों की अस्थियां विसर्जन करके पितृ तर्पण हेतु आबू पहुंचते हैं। आबू पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया के अनुसार गरासिया समाज के लोग आर्थिक स्थिति के कारण हरिद्वार नहीं जा पाते इसलिए वे पितृ तर्पण संपन्न करने हेतु नक्की झील पर आते हैं जिसकी अपनी पौराणिक मान्यता भी है।

पवित्र एवं पौराणिक आबू पर्वत स्थित नक्की झील के तट पर वैशाख पूर्णिमा को गरासिया समुदाय का विशाल मेला लगता है। वैशाख पूर्णिमा अर्थात बुद्धपूर्णिमा को गरासिया समुदाय में पीपली पूनम के नाम से जाना जाता है। इसमें राजस्थान और गुजरात के गरासिया जनजाति के हजारों लोग शामिल होते हैं। इस दिन नक्की झील के किनारे गरासिया समुदाय का संघ इकट्ठा होता है जिससे इनकी भाषा में 'हंग' कहते हैं। इनका यह हंग 5 वर्ष में बारी बारी से आबू एवं अंबाजी में एकत्रित होता है। हालांकि वर्तमान समय में यह परंपरा लुप्तप्राय हो गई है। इस समुदाय में आबू पर्वत स्थित नक्की झील को एक पवित्र स्थान माना जाता है जहां वे अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन कर पितृ तर्पण करते हैं।

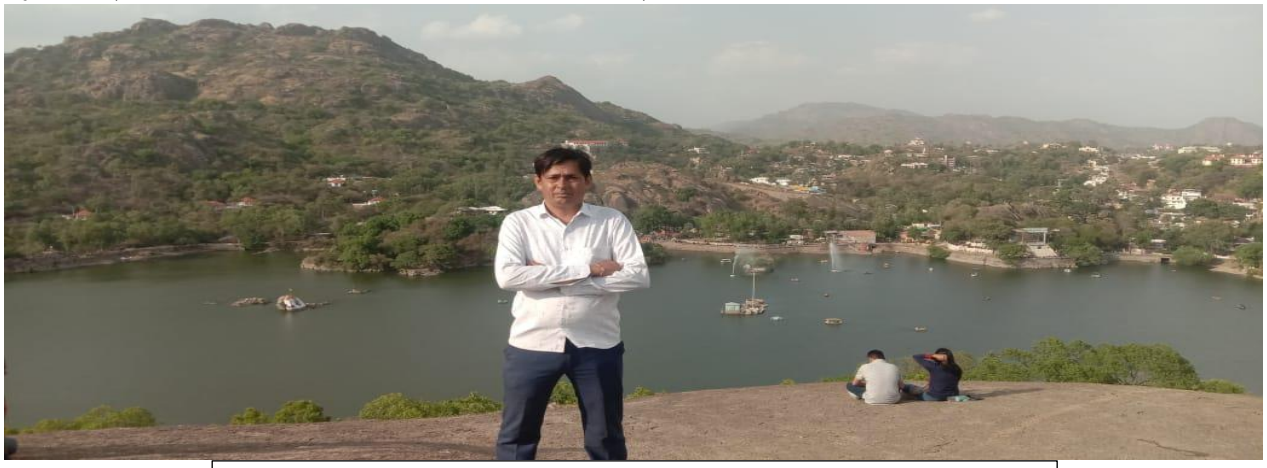

चित्र 2. नक्की झील का विहंगम दृश्य

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

पितृ तर्पण के लिए गरासिया समुदाय के लोग समूह में रंग-बिरंगी वेशभूषा पहनकर नक्की झील पर पहुंचते हैं तो यहां की सांस्कृतिक घटा सतरंगी हो जाती है। पहले सुदूर क्षेत्रों से गरासिया स्त्री पुरुष मेले में भाग लेने एवं पितृ तर्पण के लिए निश्चित दिन से पहले ही आबू की पहाड़ी पर चढ़ना शुरू करते हैं। रास्ते में महिलाएं गीत गाते हुए एवं कहीं-कहीं नृत्य करते हुए चलते हैं रात्रि होने पर पहाड़ी पर ही रात्रि विश्राम करके सुबह पुनः चलना शुरु करते हैं। रास्ते में गरासिया समूह के समूह पितरों एवं देवी देवताओं को याद करते हुए, नाचते हुए, गीतों से वातावरण को गुंजायमान बनाते हुए मेला स्थल नक्की झील के घाटों के पास पहुंचते हैं। वर्तमान समय में वाहन व्यवहार के प्रचलन के कारण मनौती लेने वाले लोगों को छोड़कर अन्य लोग मोटरसाइकिलों, जीपों/गाड़ियों या बसों आदि के माध्यम से मां बाबू स्थित बस स्टैंड तक पहुंचते हैं उसके बाद वहां से पैदल ही चीन की ओर प्रस्थान करते हैं। झील के किनारे गरासिया लोग परंपरागत रीति-रिवाजों के साथ रात्रि जागरण कर अपने पितरों की याद में दीपक जलाते हैं। परंपरागत चटकीली वेशभूषा एवं परंपरागत परंपराएं एक अद्भुत संस्कृति को जीवंत करती हैं। पहले के समय में गरासिया लोग मेले वाले दिन ही नक्की झील पहुंचते थे और पितृ तर्पण परंपरा का निर्वहन करते थे जबकि पिछले कुछ वर्षों से पीपली पूनम से पहले भी अस्थि विसर्जन के लिए गरासिया समुदाय के समूह नक्की झील आने लगे हैं और

चित्र 3. पितृ तर्पण की रस्म के बाद तिलक लगाते हुए

पीपली पूर्णिमा से पहले ही दिवंगत आत्मा का पितृ तर्पण संपूर्ण करते हैं। अप्रैल-मई 2022 में लगभग पीपली पूनम से 1 महीने पहले हर रविवार और सोमवार को गरासिया के छिटपुट समूह नक्की झील पर अस्थि विसर्जन एवं श्राद्ध करते दिखाई दिये। एक तो इसका कारण कोरोनावायरस के कारण ये लोग पिछले दो वर्षों से पितृ तर्पण नहीं कर पाये थे। हालांकि इससे पहले कि वर्षों में भी यह परंपरा देखने को मिली है। जो 2023 भी जारी रही। क्योंकि पहले पीपली पूनम के दिन ही पितृ तर्पण की रस्म अदा की जाती थी। जो समय के साथ नई परम्परा की ओर संकेत करता है। क्योंकि वर्तमान समय में गरासिया आबादी पहले के मुकाबले बढ़ गई हैं। एक दिन में हजारों की संख्या में लोगों के जुटने से भारी भीड़ हो जाती है जिससे इनके कुछ समूह पीपली पूनम से पूर्व भी पितृ तर्पण की रस्म को अदा करने लगे हैं।

झुमरा नृत्य- पारंपरिक वेशभूषा में सजी-धजी गरासिया महिलाएं परंपरागत आभूषणों से सुसज्जित होकर नक्की झील के किनारे गोले बनाकर परंपरागत झुमरा नृत्य प्रस्तुत करती हैं तो ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग से अप्सराएं मृत्यु लोक में इस अवसर पर सहभागी बनने हेतु आई हो। इस नृत्य में सिर्फ महिलाएं ही भाग लेती हैं। वे गोले के बाहर गोले में नृत्य के साथ ठुमका लगाते हुए पारंपरिक गीतों को गाते हुए चलती है। इस दौरान गोले बनते-बनते कई गोलों-टोलों में यह नृत्य विभाजित हो जाता है जो एक बड़ा ही मनोहर दृश्य उत्पन्न करता है। ढोल, थाली, मादल, बांसुरी आदि वाद्ययंत्रों की रग रग में उत्तेजना एवं जोश उत्पन्न करने वाली ध्वनि के साथ गरासिया महिलाएं समूह में मुट्ठी बांधकर विभिन्न मुद्राओं में अपने हाथों को ऊपर नीचे घुमाती हुई घंटों नाचती रहती है। (भानावत, 1989)

वालर नृत्य- आबू पर्वत नक्की झील के किनारे मेले के दौरान झूमरा नृत्य के साथ-साथ पारंपरिक रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर वालर नृत्य भी बड़े ही उमंग एवं उत्साह के साथ किया जाता है जो हर किसी के मन को मोह लेता है। वालर नृत्य में दाहिना पांव दाहिनी और रखते हुए एवं बाया पांव दाहिने पांव से मिलाकर कदम दर कदम बढ़ते हुए घंटों नृत्य किया जाता है।(भानावत, 1989) युवा टोलियाँ बनाते हुए मनमोहक वालर नृत्य करते एवं गाते हुए खुशियां मनाते हैं। यह नृत्य देसी एवं परदेसी पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र होता है। हालांकि मेरे क्षेत्र कार्य के दौरान इस तरीके के नृत्य एवं गान देखने को नहीं मिले केवल पितृ तर्पण से पहले नाचते गाते हुए वाद्य यंत्र बजाते हुए नक्की के किनारे पहुंचते हैं।

चित्र 4. स्नान करके पितृ तर्पण के लिए जाते हुए गरासिया

पितृ तर्पण- अन्य समाजों की तरह गरासिया समाज में भी मृत्यु के बाद जीवन की कल्पना की गई और उसमें आने वाली बाधाओं के निवारण हेतु पितृ तर्पण संबंधी क्रिया कर्म किए जाते हैं। आबू पर्वत पर नक्की झील के किनारे एवं अन्य जगहों पर नृत्य तथा अन्य परंपराओं के निर्वहन के बाद गरासिया पुरुष पहले समय में अपने साथ लाए हुए गेहूं के दलिये को बड़े कड़ावों में डालकर उसमें गुड़ मिलाकर लापसी बनाते हैं।

ये समूह में वाद्य यंत्रों के साथ नाचते गाते हुए नक्की झील की परिक्रमा के पास कानुड़ा घाट, शिव मंदिर घाट और जेटी सहित आसपास के क्षेत्र के पास स्नान करके पूर्वजों की अस्थियों के साथ पितृ तर्पण हेतु झील में उतरते हैं। नक्की झील के घाट वाद्य यंत्रों की गूंज के साथ अपने परिजनों को खो चुके लोगों की करुण रुदन एवं सिसकियों की आवाज से दिनभर वातावरण को शोकमय बना देते हैं। वही परिवार के लोग एक दूसरे को सांत्वना देते हुए ढांढस बंधाते हैं।

अस्थि नहीं, नाखून का विसर्जन- गरासिया समाज के लोग पूर्वजों के तर्पण के लिए समेटी हुई सफेद धोती पर कटोरी, नारियल, अगरबत्ती, पत्तल के दोने, प्रसाद, सिंदूर, और एक छोटी हांडी लेकर नक्की झील के घाट पर पहुंचते हैं। हांडी के अंदर गुलाबी कपड़े में लपेट कर दिवंगत परिजन के दोनों हाथों के अंगूठे के नाखून लाते हैं कुछ संपन्न लोग नाखूनों को चांदी से मंडवा कर भी लाते हैं। इन अंगूठों के नाखून को दिवंगत परिजनों की आखिरी निशानी माना जाता है। पितृ तर्पण में दिवंगत परिजनों के अस्थि की जगह नाखूनों का विसर्जन करते हैं जिनके पास दिवंगत परिजनों के नाखून नहीं होते वे चांदी के नाखून बनाकर उनका विसर्जन करते हैं। इसमें भी नक्की झील की खुदाई नाखूनों से होने की कथा जुड़ी हुई है। गरासियों का ब्राह्मण या पंडित विधि विधान के साथ पितृ तर्पण की रस्म अदा करवाते हैं। विधि-विधान में सबसे पहले नारियल से हवन के बाद अगरबत्ती, धूप दीप जलाकर बूंदी की प्रसादी का भोग लगाया जाता है। दिवंगत परिवार

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

का पुरुष स्नान करके सफेद धोती पहनकर पितृ तर्पण की रस्म पूर्ण करने हाथ में सफेद पिराई के ऊपर नारियल रखकर प्रसादी के साथ पानी में प्रवेश करके अस्थि विसर्जन करके हाथ जोड़ते हैं फिर डुबकी लगाकर पितृ तर्पण की परंपरा को पूर्ण करते हुए दिवंगत आत्मा की मुक्ति की कामना करते हैं। पितृ तर्पण इस परंपरा को गरासिया लोग अपनी बोली में 'फूल घोलना' कहते हैं जबकि नाखूनों के अवशेषों को 'फूल' के नाम से जानते हैं। स्थानीय विधायक समारामजी गरासिया के अनुसार इस बार पितृ तर्पण की रस्म वैशाख एकम से ही शुरू हो गई थी। जो वैसाख पूर्णिमा को जाकर समाप्त हुई।

दिवंगत व्यक्ति के परिवार के सभी सदस्य अपने पहने हुए कपड़ों को नक्की झील के घाट के तट पर पोटली बनाकर रखते हैं। नक्की झील के घाट के किनारे पानी में डुबकी लगाकर नए कपड़े पहनते हैं और पुराने कपड़ों को वही घाट के किनारे छोड़ देते हैं। फिर पितृ तर्पण की रस्म अदा करने व्यक्ति को उसकी बहन नई धोती पहनाती है लेकिन वर्तमान समय में धोती की जगह साथ लाएं सामान्य वस्त्र पहनते हैं। शोक संतृप्त व्यक्ति को परिवार के लोग माला पहनाते हुए तिलक लगाकर उसका अभिवादन करते हैं। तिलक सीधे हाथ की मध्यमा उंगली से किया जाता है। वहीं कुछ-कुछ गरासिया समूह के लोग तिलक मध्यमा उंगली के पास वाली उंगली से करते हैं। बहन पितृ तर्पण करने वाले भाई को माला पहनाने के बाद 'राम भाई राम' और भाई बहन को 'राम बाई राम' कहकर एक दूसरे का नमस्कार करते हैं। इसके साथ ही पितृ तर्पण की सभी रस्में संपूर्ण होती है। फिर सभी लोग मिलकर अपने परंपरागत वाद्य यंत्रों की मधुर ध्वनि के साथ नाचते-गाते हैं। क्योंकि पितृ तर्पण की संपूर्ण रस्म के बाद रोना गरासिया समुदाय में अशुभ माना जाता है। करीबी आगंतुक और ग्रामवासी अस्थि विसर्जन में शरीक दिवंगतों के परिजनों को परंपरानुसार प्रचलित नेग अदा करते हैं और प्रसादी का वितरण करके वाद्य यंत्र बजाते नाचते गाते हुए वापस अपने-अपने गांव को रवाना हो जाते हैं।

आमोद प्रमोद- आबू पर्वत स्थित नक्की झील के किनारे प्रतिवर्ष लगने वाला गरासिया जनजाति का पीपली पूनम का मेला इनके लिए एक मनोरंजन का केंद्र भी बनता जा रहा है। कई गरासिया लोग साल में एक बार ही यहां पीपली पूनम के मेले में आते हैं जिससे वह यहां पर नक्की झील में बोटिंग का आनंद लेते हैं, विभिन्न प्रकार के झूले झूलना, गोदना गुदवाना, अंग्रेजी में टेटू बनवाना, जादू का खेल, मौत का कुआं, फोटोग्राफी आदि का आनंद लेते हैं। इस मेले के दौरान गरासिया लोग अपनी जरूरत की विभिन्न वस्तुओं की खरीदारी मेले के दौरान करते हैं। अब तो इनके मेले में अन्य समाजों के लोग भी शामिल होने लगे हैं।

पंच परमेश्वर- नक्की झील के किनारे पीपली पूनम के दिन आयोजित गरासिया समुदाय के मेले में पूरे भाकर पट्टे के सभी गांव की एक जनतांत्रिक महापंचायत बैठती है। नक्की झील के आसपास विभिन्न उद्यानों में गरासिया समुदाय के पंच पटेलों की महापंचायत बैठती है। सभी पटेल एक जाजम पर बैठते हैं जिसे धर्मराज का सिंहासन मानते हैं। जाजम पर बैठने से पहले पंच-पटेल शपथ लेते हैं कि यदि वे झूठा या गलत न्याय करें तो हमें जाजम पहुंचे। इस बारे में गरासिया लोगों का विश्वास है कि पटेलों के दिमाग में धर्मराज का प्रभाव एवं बुद्धि प्रवेश करके उन्हें सही मार्गदर्शन एवं प्रेरणा देती हैं। विवादों की सुनवाई में प्रत्येक गवाह गवाह अपना बयान देने से पहले धर्म आदि की शपथ लेता है। इन विवादों के निपटाने की प्रक्रिया में यदि कोई व्यक्ति अपना तर्क सही तरीके से नहीं दे सकता तो वह किसी अन्य व्यक्ति को अपना वकील नियुक्त कर सकता है जिससे गरासिया भाषा में 'पेचाडिगिया' कहा जाता है। पंचायत के अपने नियम होते हैं जिनका पालन करना सभी के लिए आवश्यक होता है। इस महापंचायत में वर्ष भर में हुए सामाजिक विवादों, विभिन्न परिवारों के आपसी विवादों का निपटारा किया जाता है। पुराने झगड़ों एवं विवादित रिश्तों का हल निकाल कर नए रिश्ते बनाएं जाते हैं। पंचायत की समाप्ति पर घोषणा की जाती है कि 'अवगत खूटेगी, कोई झगड़ा फसाद नहीं करेंगे।' यानी आज विवाद या झगड़ा खत्म हो गया आगे से इस पर कोई वाद विवाद नहीं करेगा। दोनों पक्ष भी शपथ लेते हैं कि 'कहा को पटेल थूराज में घलाव दीजो' इसका अर्थ है कि अगर हमने फिर से विवाद किया तो सरकार के हाथों में सौंप देना।(शेखावत, 2009) पंचों को परमेश्वर समान माना जाता है और उनके निर्णय सर्व गरासिया समुदाय को मान्य होते हैं। लेकिन वर्तमान समय में कुछ मामले ऐसे भी देखे गए हैं जब पंचों के निर्णय के खिलाफ पुलिस थाने में केस दर्ज किए गए। इस दौरान कोई भी व्यक्ति शराब पीकर एवं शस्त्र साथ में लेकर पंचायत में नहीं बैठ सकता। इसका उल्लंघन करने पर पंचायत संबंधित व्यक्ति को जाजम से निष्कासित करके जुर्माना भी लगा सकती है। हालांकि इस तरह की परंपरा मेरे दोनों वर्ष पीपली पूनम मेले के पर्यवेक्षण के दौरान देखने को नहीं मिली। पूछताछ करने पर गरासिया समाज बंधुओं ने बताया कि यह परंपरा पहले के समय में थी जो वर्तमान में लुप्त हो गई है।

चित्र 5. फूल घोलने की रस्म के बाद शोक संतृप्त को माला पहनाते

स्वयंवर- वैशाख महीने की पीपली पूनम को नक्की झील के मेले में गरासिया समाज की स्वयंवर की एक अनूठी परंपरा देखने को मिलती है। यहां पर युवा लड़के-लड़कियों की पसंद के अनुसार सगाई संबंध निश्चित किए जाते है तथा विवाह भी रचाएं जाते हैं। नक्की झील गरासिया लोगों के लिए अनोखे प्रेम की निशानी है। इस मेले में नक्की झील से जुड़ी रसिया बालम एवं कुंवारी कन्या की स्वयंवर परंपरा को निभाते हुए युवा गरासिया लड़के-लड़कियां भी अपने जीवनसाथी का चुनाव एक दूसरे की पसंद से करते हैं। इसमें गरासिया नवयुवतियां अपनी पसंद के लड़के के साथ विवाह करती है। इस स्वयंवर की खास बात यह है कि गरासिया लड़की अपनी पसंद के किसी लड़के को अपना पति चुनने से पहले अपने पिता को माला पहनाकर उनसे अनुमति लेती है। इसमें लड़की का पिता अपने चुने हुए पांच-सात लड़कों को लड़की की पसंद के लिए लेकर आता है। लड़की अपने पिता द्वारा चुन कर लाए लड़कों में से अपनी पसंद के लड़के को अपने पति के रुप में चुनती हैं। यदि लड़की को उसके पिता द्वारा चुनकर लाए गए लड़कों में से कोई पसंद नहीं होता है तो वह अपनी पसंद की किसी अन्य लड़के के साथ मेले से भाग जाती हैं। लड़के के परिजन इसकी सूचना लड़की के परिवार वालों जितना जल्दी हो देते हैं। इसके बाद गांव में पटेल की अध्यक्षता में पंचायत बुलाई जाती है। जिसमें लड़के के घर वालों से जुर्माना वसूला जाता है जिसे गरासिया समाज में 'दापा' के नाम से जाना जाता है इसके बाद दोनों के रिश्ते को सामाजिक रूप से मान्यता दे दी जाती है। वर्तमान समय में पिता की पसंद के लड़कों में से पति के चुनाव की स्वयंवर परंपरा लगभग नगण्य हो गई है जिसकी मुख्य वजह लड़ाई झगड़े होना। नापसंद किए गए लड़के उसके परिवार के साथ लड़ाई झगड़ा करते हैं साथ ही वर्तमान समय में लड़कियों में भी अधिक जागरूकता देखने को मिलती है वह अपने जीवनसाथी का चुनाव अपनी पसंद से ही करना चाहती है न की पिता

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

की पसंद से। अभी ऐसे कई मामले देखने को मिले हैं जिसमें लड़की को भगाने पर लड़ाई-झगड़ा भी हो जाता है जो खूनी संघर्ष तक बढ़ जाता है साथ ही ऐसे मामले पुलिस में भी दर्ज किए जाने लगे हैं।

जोड़ियां जोड़ने वाला मेला- वैसे तो गरासिया समुदाय का हर मेला व त्योहार जोड़ियां बनाने वाला होता है अर्थात इनमें गरासिया लड़के-लड़कियां एक दूसरे से परिचित होते हैं तथा साथ जीवन जीने की शर्तों एवं कसमों को निश्चित करके अपने जीवनसाथी का चुनाव करते हैं। एक दूसरे की पारिवारिक स्थिति की जानकारी होने तथा एक दूसरे को पसंद आने पर दोनों युवा मेले से घर ना जा कर भाग जाते हैं। लड़के की बहन या घर के पास के जंगल में छुप कर, आजकल फोन के माध्यम से लड़का अपनी बहिन या अन्य संबंधी महिला को लड़की लाने की जानकारी देता है। फिर लड़के की बहन अपनी सहेलियों के साथ नई भाभी को लेने बताई स्थान पर जाती है जहां पर ननंद और भाभी के बीच में काफी मान मनोव्वल और ना नूकर होती है इसके बाद लड़की उनके साथ लड़के के घर आ जाती है इसके कुछ समय बाद लड़का भी जो उस समय लड़की से कुछ दूर चला जाता है बुलाने पर घर वापस आ जाता है। इसके बाद लड़के वाले लड़की के परिजनों को उसके लाने की सूचना देते हैं जिस पर गांव या फली में पटेल की अध्यक्षता में पंचायत बैठती है जिसमें 'दापा' राशि निश्चित की जाती है। दापा राशि चुकाने के बाद दोनों के संबंधों को सामाजिक मान्यता प्रधान की कर दी जाती है इसके साथ ही इनका विवाह संपन्न हो जाता है। यह जोड़ा बिना विधि विधान या औपचारिक विवाह के वर्तमान समय की लिव-इन-रिलेशनशिप की तरह साथ रहते हैं और बच्चों की उत्पत्ति करके परिवार को आगे बढ़ाते हैं। इस कारण गरासिया लोगों को 'कुंवारे देश के निवासी' भी माना जाता है। ऐसा ही एक वाक्य मेरे क्षेत्र कार्य के दौरान सिरोही जिले के पिंडवाड़ा तहसील के मौरस गांव में देखने को मिला जिसमें एक लड़का लड़की को भगा कर ले आया था और उसके बाद पंचायत जुट रही थी। जहां मुझे इनके सामाजिक रीति-रिवाजों को समझने में सहायता मिली। पहले के समय में लड़का-लड़की मेले से भागने के बाद जंगलों में छुप कर एक दूसरे के साथ रहते थे और बच्चे होने के बाद ही घर वालों के सामने आते थे। जबकि वर्तमान समय में ऐसा देखने को नहीं मिलता है। जो समय और संचार के साधनों के प्रचलन के प्रभाव को इंगित करता है। विधिवत् विवाह इनके बच्चे या कभी-कभी तो पोते अपने माता-पिता या दादा-दादी का विवाह करते हैं। मेरे क्षेत्र कार्य के दौरान ऐसा ही एक मामला देखने को मिला जिसमें 8 बेटे बेटियां और 21 पोते पोतियो ने अपने 82 वर्ष के पिता एवं दादा की शादी करवाई थी। हालांकि यह प्रथा हिंदू धर्म के प्रभाव के कारण राजस्थान और गुजरात बॉर्डर एरिया के दोनों और के इलाकों में ही देखने को मिलती है। बाकी क्षेत्र के गरासिया जिंदगी भर लिव इन रिलेशनशिप में ही रहते हैं और औपचारिक रूप से विवाह नहीं करते हैं। इस मामले में गरासिया समाज आधुनिक समाजों से काफी आगे हैं क्योंकि इस समाज में लड़के-लड़कियों को जीवन में प्रेम की परिभाषा समझने, प्रेम का साक्षात्कार करने तथा अपने प्रेमाचार के सपनों को साकार करने का पूरा अवसर उन्हें प्रदान किया जाता है। वे विवाह से पहले भी स्वतंत्र होते हैं और विवाह के बाद भी स्वतंत्र रहते हैं।

चित्र 7. पति के चुनाव से पहले पिता की अनुमति लेते हुए

चित्र 8. मेले से जीवनसाथी का चुनाव करने के बाद शर्तों एवं भागने की योजना बनाती युवा जोड़ी

निष्कर्ष

अरावली पर्वतमाला के भाखर क्षेत्र की निवासी गरासिया जनजाति ने मेलों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक परंपरा को जीवंत बनाए रखा है। समय के साथ इनकी संस्कृति भी आधुनिकता से प्रभावित हुई है फिर भी गरासिया लोगों ने अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान को अन्य जनजातियों से अलग रूप में संजोए रखा है। आबू पर्वत स्थित नक्की झील के किनारे पीपली पूनम को आयोजित मेला गरासिया जनजाति की संस्कृति परंपरा, जन्म, मरण एवं परण का अनोखा संयोजन देखने को मिलता है। जो इनके उल्लास और उमंगमय जीवन का प्रतीक है। अरावली के पहाड़ी क्षेत्र में कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में रहते हुए, दयनीय आर्थिक स्थिति एवं विकास के अवसरों से वंचित रह कर भी गरासिया समुदाय सार्वजनिक जीवन में सामूहिक उल्लास की अभिव्यक्ति के अवसर को संजोए हुए हैं। नक्की झील मेला वर्तमान समय में बहुजातीय एवं सर्वसामुदायिक स्वरूप में ढलता जा रहा है।

परिवर्तन- समय और शिक्षा के साथ गरासिया समाज में सामाजिक परिवर्तन की लहर बड़ी तेजी से आगे बढ़ती दिखाई दे रही है अब पुरानी परंपराओं में बदलाव देखने को मिल रहा है।

1. पीपली पूनम के साथ अब संपूर्ण वैशाख महीने को पितृ तर्पण के लिए उपयुक्त माना जाने लगा।
2. दहेज जैसी कुप्रथा गरासिया समाज में नहीं देखने को मिलती। इस कारण लड़की इस समाज के लिए बोझ नहीं है।
3. अब किसी प्रकार की अप्रिय घटना होने पर पटेल की जगह पुलिस से संपर्क किया जाता है।

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

4. अब विभिन्न मेलों के अलावा अन्य प्रसंगों पर भी जीवन साथी का चुनाव किया जाता है लेकिन शादी से पहले साथ रहने की परंपरा अब धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।
5. अन्य समाजों की तरह गरासिया समाज में भी अब विधि विधान से बारात आदि ले जाकर परिणय संस्कार संपन्न किए जाने लगे हैं।
6. मेले के दौरान पुरानी रंजिश को लेकर खूनी संघर्ष, लड़ाई झगड़े एवं छेड़छाड़ आदि भी यहां देखने को मिलते हैं। जिससे नौबत पुलिस केस तक चली जाती है।
7. अब गरासिया समाज में भी अन्य समाजों की तरह पहले सगाई और उसके बाद बारात ले जाना, चंवरी एवं फेरा लगाना आदि रिवाज प्रचलित होने लगे हैं।

पीपली पूनम के इस मेले ने गरासिया जनजाति में संस्कृति परंपराओं के संरक्षण के साथ उत्साह एवं उमंग को समाहित करते हुए इनके जीवन में नई ऊर्जा का संचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वर्तमान समय की सबसे महती आवश्यकता है इस मेले के मौलिक स्वरूप को बनाए रखने की जिससे गरासिया लोग अपनी माटी और सांस्कृतिक परंपराओं से हमेशा जुड़े रह सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजस्थान जिला गजेटियर, सिरोही – 2004 – जयपुर: जनशक्ति एवं गजेटियर्स निदेशालय राजस्थान, पृष्ठ- 5 व 9
2. धौंडियाल, बी.एन. – 1967 – राजस्थान जिला गजेटियर सिरोही – जयपुर: गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस, पृष्ठ- 424-25
3. इर्सकिन, मेजर के.डी. – 1909 - राजपूताना गजेटियर, खंड 3a – इलाहाबाद: द पायोनियर प्रेस, पृष्ठ- 285
4. भानावत, महेंद्र – मार्च 1989 - कुंवारे देश के आदिवासी - मुक्तक प्रकाशन, उदयपुर. प्रथम संस्करण, पृष्ठ- 70
5. 'ट्राईब' पत्रिका – जुलाई-दिसंबर 2003, खंड 35, अंक 3-4 - माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर, पृष्ठ- 21-22
6. 'ट्राईब' पत्रिका – अप्रैल-दिसंबर 2019, खंड 50, अंक 2-4 – माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर, पृष्ठ- 10-11
7. वहीं पृष्ठ- 45
8. शेखावत, अर्जुनसिंह - मार्च 2009 - संस्कृति की वसीयत – पाली : आदिवासी अकादमी (दिव्या प्रकाशन), पृष्ठ- 66-67
9. प्रत्यक्ष मुलाकात एवं साक्षात्कार-
10. कानाराम पुत्र गुलाजी अंगारी गरासिया, गांव करजिया, तहसील रेवदर जिला सिरोही, राजस्थान
11. गंगाराम गरासिया, नाड़ी फली, गांव थंडीबेरी, जिला सिरोही
12. समाराम गरासिया, विधायक, आबू पिंडवाड़ा विधानसभा क्षेत्र
13. समाचार पत्र-पत्रिकाएं-
14. सिरोही दैनिक भास्कर पाली संस्करण, दिनांक 17 मई 2022
15. सिरोही दैनिक भास्कर, 27 अप्रैल 2022
16. सिरोही दैनिक भास्कर पाली संस्करण, दिनांक 26 अप्रैल 2022